

4/08/21 HT - Page No-1 ET.

Offline exams are back ahead of opening of universities

Prashant K Nanda

prashant.n@livemint.com

A group of 14 central universities will hold offline entrance exams in September, while some central schools will conduct physical entrance tests shortly, in a clear indication of physical exams being back for schools, colleges and universities.

Physical exams will be held after the schools and universities get a go-ahead from the Union education ministry. Several other entrance tests such as those for Jawaharlal Nehru University (JNU), the Indian Council of Agricultural Research and agriculture varsities are also slated for September. These entrance exams may be the precursor to the reopening of colleges and varsities, which have been closed for more than 17

months. "We have approached the national testing agency (NTA), which functions under the education ministry, and it has agreed to do face-to-face exams, which will be computer-based in external centres in September. More details are being worked out," said R.P. Tiwari, vice-chancellor of Central University of Punjab. "This will benefit a consortium of 14 central universities that are relatively new. The welfare of students is in our mind while deciding this. The covid-19 situation is improving and we hope to see a much better environment in September," Tiwari said. "The Central Universities Common Entrance Test is not happening this year for 40-odd central varsities, but 14 are going ahead with a national-level entrance examination. At the higher education and uni-

versity level, not holding reliable assessments harms students and the institution," said an administrator in another central university. The ministry is, as a principle, allowing schools and institutions under its jurisdiction to hold the exam, said a ministry official requesting anonymity. "However, while doing so, they have to adhere to covid-19 safety protocols keeping in mind the health of students and staff conducting the exams," the official said. Universities and institutions are free to approach the NTA for any help in examination delivery, the official said.

Delhi University is conducting the postgraduate entrance examination via the NTA, while Jawaharlal Nehru University (JNU) is holding it via the NTA in September. These will be computer-based tests.

इंजीनियरिंग शिक्षा में बदलाव की जरूरत

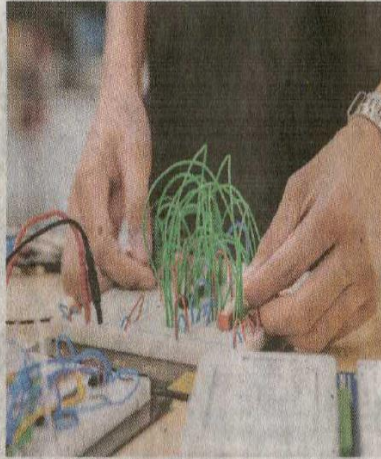
सरकार ने पांच भारतीय भाषाओं में इंजीनियरिंग शिक्षा उपलब्ध कराने की पेशकश की है, यह एक अच्छा कदम है, मगर जिस तरह से पिछले कुछ वर्षों में सैकड़ों इंजीनियरिंग कॉलेज बंद हुए हैं, उससे साफ है कि इंजीनियरिंग शिक्षा में आमूल-चूल परिवर्तन की जरूरत है।

बी ता एक साल कई तरह से भारत के दूरसंचार ढांचे के लिए परीक्षा जैसा रहा है। अनेक संस्थानों के कर्मचारी घर से काम कर रहे हैं, विद्यार्थी घर पर रहकर कक्षाओं में शामिल हो रहे हैं; ई-कॉमर्स एक अलग स्तर पर पहुंच गया है और अब तकरीबन हर चीज की होम डिलिवरी उपलब्ध है। गौर कीजिए कि यह सब तब हुआ, जब अधिकांश लोगों के लिए अंग्रेजी भाषा रोड़ा है। तब फिर, यह सब कैसे हुआ? सीधे शब्दों में कहें तो, आसान यूजर इंटरफेस, उपयोग की सहजता और फोन सेट के साथ ही डिजिटल प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध स्थानीय भाषाएं, इन सबने उत्तराखंड के दूरस्थ क्षेत्र में बैठे व्यक्ति और दिल्ली में बैठे व्यक्ति

के बीच लगभग संतुलन बना दिया। इसीलिए जब सरकार ने इंजीनियरिंग कॉलेजों में स्थानीय भाषाओं में शिक्षा देने की घोषणा की, तो इसकी व्यावहारिकता को लेकर बहस शुरू हो गई। संभवतः यह अद्भुत कदम है, जिससे बहुत से विद्यार्थियों, खासतौर से तकनीकी रुझान वाले लोगों को लाभ होगा। इसी वजह से अपेक्षाकृत अच्छी अंग्रेजी न बोल पाने वाले इंजीनियर को भी आईटी और सॉफ्टवेयर सेक्टर में अच्छे वेतन वाली नौकरी मिल जाती है। प्रोग्रामिंग का आधार भले ही अंग्रेजी हो, लेकिन एल्गोरिथ्म और तर्क

इसके बाइनरी बेस (शून्य तथा एक) के साथ भाषा की बाधाओं से परे चले जाते हैं। कोडिंग से जुड़े बहुत से सॉफ्टवेयर इंजीनियर जरूरी नहीं कि अंग्रेजी में भी पारंगत हों।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के एक साल पूरा होने पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बताया कि आठ राज्यों के 14 इंजीनियरिंग कॉलेजों में पांच भारतीय भाषाओं- हिंदी, तमिल, तेलुगु, मराठी और बांग्ला- में इंजीनियरिंग की पढ़ाई शुरू की जा रही है। इसके अपने जोखिम और चुनौतियां हैं, क्योंकि स्थानीय भाषाओं में पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध कराना आसान नहीं है। इस कदम की छात्रों के लिए भी सीमाएं होंगी; मसलन, अंग्रेजी में पारंगत न होने के कारण कई लोग अंग्रेजी में होने वाली चर्चाओं में शामिल नहीं हो पाएंगे।



इसके अलावा, इंजीनियरिंग की सारी शाखाएं आसानी से स्थानीय भाषा के साथ तालमेल नहीं बिठा सकती। वास्तव में इस प्रयोग के नतीजे सामने आने में कुछ वर्ष लगेंगे। इस कदम से फौरन किसी तरह के बड़े बदलाव की अपेक्षा करना ठीक नहीं है। स्थानीय भाषाओं में इंजीनियरिंग की किताबें उपलब्ध कराए जाने में कुछ वर्ष लग जाएंगे और फिर स्थानीय भाषा में पाठ्यक्रम के साथ विद्यार्थियों के साथ ही शिक्षकों के सहज होने में और छह-सात वर्ष लग सकते हैं। दरअसल जिन देशों में स्थानीय भाषाओं में इंजीनियरिंग की शिक्षा उपलब्ध है, वहां प्राथमिक स्तर से इस पर काफी काम किया गया।

एक ओर तो भारतीय भाषाओं में इंजीनियरिंग की शिक्षा उपलब्ध कराने की पहल हो रही है, दूसरी ओर बड़ी संख्या में इंजीनियरिंग कॉलेजों के बंद होने की खबर आई है, जो कि इंजीनियरिंग शिक्षा के अंतर्विरोध और इंजीनियरिंग कॉलेजों के व्यवसाय में बदल जाने को रेखांकित कर रहा है। 2016-17 से पिछले करीब पांच वर्षों में ही जहां 343 इंजीनियरिंग कॉलेजों में ताले लग गए, वहीं एआईसीटीई (ऑल इंडिया काउंसिल फॉर टेक्निकल एजुकेशन) ने 602 नए इंजीनियरिंग कॉलेज खोलने की मंजूरी दी है। 2014-15 में पूरे देश भर में इंजीनियरिंग कॉलेजों में रिकॉर्ड 32 लाख सीटें उपलब्ध थीं, जो आठ फीसदी घटकर अब 23.28 लाख रह गई हैं। फिर भी, इंजीनियरिंग शिक्षा की मांग जारी है, क्योंकि अब भी इसे करिअर के लिहाज से एक सुरक्षित क्षेत्र माना जाता है। देश में दो हजार के दशक के मध्य में इंजीनियरिंग कॉलेजों की बाढ़ आ

गई थी, खासतौर से दूसरे और तीसरे दर्जे के शहरों में। ऐसा इसलिए हुआ, क्योंकि वहां ऐसे संस्थान स्थापित करने के लिए जमीनें और बुनियादी ढांचा सस्ता था। मगर जब बात शिक्षा की गुणवत्ता की आई, तो ये फिसड़ड़ी साबित हुए, क्योंकि इन संस्थानों में न तो काबिल शिक्षक मिल पाते हैं और न ही विद्यार्थी। हालांकि इनमें से कुछ कॉलेज बहुत अच्छे भी बन गए, खासकर वे जिन्होंने सॉफ्टवेयर इंजीनियरों की मांग का फायदा उठाया। कई संस्थानों ने छात्रों को प्रशिक्षित करने के लिए बड़ी तकनीकी कंपनियों के साथ गठजोड़ किया, यहां तक कि उनके छात्रों को कॉलेज से बाहर निकलने से पहले ही नौकरियों के अच्छे प्रस्ताव मिलने लगे। टेक फर्मों ने इस मार्ग को इंजीनियरों की आपूर्ति श्रृंखला के लिए अपनी आवश्यकता पूर्ति के लिए उपयुक्त पाया। इसी होड़ के कारण कई ऐसे संस्थान भी खड़े हो गए, जहां न तो पर्याप्त ढांचा था और न ही शिक्षक। यही वजह है कि बीते एक दशक में सैकड़ों इंजीनियरिंग कॉलेजों में ताले लग चुके हैं और यह सिलसिला जारी है। पिछले एक दशक में रोजगार बाजार सुस्त हुआ है और तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में भी इसे महसूस किया जा रहा है, विशेष रूप से इंजीनियरिंग में, जहां नौकरियां बेशक खत्म नहीं हुई हैं, लेकिन शुरूआती आय में काफी गिरावट आई है। आकर्षक नजर डालें, तो पता चलता है कि कुछ शीर्ष निजी इंजीनियरिंग कॉलेजों के कैम्पस में औसत तीन से पांच लाख रुपये सालाना की नौकरियों की पेशकश की जा रही है लेकिन उन विद्यार्थियों की स्थिति बुरी हो जाती है, जिन्हें कैम्पस में ऐसे प्रस्ताव नहीं मिलते और उनकी संख्या कहीं अधिक है। जबकि दूसरी ओर इंजीनियरिंग शिक्षा की लागत कम नहीं हुई है। औसत से कुछ बेहतर संस्थानों में इंजीनियरिंग शिक्षा का खर्च तीन से पांच लाख रुपये सालाना तक है। निस्संदेह मांग की तुलना में आपूर्ति संख्या में बहुत अधिक है और छात्रों की गुणवत्ता भी संदिग्ध है। इन्हीं सब कारणों से इंजीनियरिंग कॉलेजों की सीटें नहीं भर पा रही हैं और अनेक इंजीनियरिंग कॉलेज बंद हो रहे हैं। इसके अलावा, डेटा और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में कई ऑनलाइन कौशल विकास कार्यक्रम हैं, जो इंजीनियरों की नौकरियां हड़प ले रहे हैं। बदलते समय, वरीयताओं और समाज तथा उद्योग की जरूरतों के अनुरूप पाठ्यक्रमों को गतिशील और रोजगार उन्मुख बनाने की आवश्यकता है। इंजीनियरिंग शिक्षा स्थानीय भाषा में उपलब्ध होना एक अनुकूल कदम है, लेकिन जैसा कि स्पष्ट है, इसके सफल होने में कुछ साल लगेंगे। कुल मिलाकर तकनीकी शिक्षा में, जिसमें प्रबंधन, पॉलिटिकल और इंजीनियरिंग स्ट्रीम शामिल हैं, आमूल-चूल परिवर्तन की जरूरत है।



नारायण कृष्णमूर्ति
वरिष्ठ पत्रकार

THE TIMES OF INDIA, NEW DELHI / NOIDA / GHAZIABAD
WEDNESDAY, AUGUST 4, 2021

 **GALGOTIAS UNIVERSITY**
(Under the Uttar Pradesh Private Universities Act No. 12 of 2019)
SCHOOL OF BUSINESS

4 Ranked 4 in Uttar Pradesh
Ranked 73 in All over India

India Today Best Colleges Survey 2021
By  India Today Group, NEERA Survey, May 2021

INDIA TODAY **INDIA'S BEST BBA COLLEGES 2021**

ADMISSION OPEN 2021-2022 #GetYourSelfPlaced

BBA with specialization in:

- Aviation Management
- Business Analytics
- Logistics and Supply Chain Management
- Marketing & Automobile Management
- Banking, Financial Services and Insurance
- Facilities and Hygiene Management

Times Engineering Survey 2021

2 Top Placement Amongst Universities
Ranked No. 2 in Uttar Pradesh
Ranked No. 16 in All over India

2 Best Research Capability Amongst University
Ranked No. 2 in Uttar Pradesh
Ranked No. 12 in All over India

Call @ **+91 98101 62221, +91 95828 47072, 0120-4370000**
admissions@galgotiasuniversity.edu.in

For the complete list of programmes offered and to apply online visit:
www.galgotiasuniversity.edu.in

Students are eligible to get Honours degree with extra credits.



'Blended learning model is the way forward'

HT Brand Studio
letters@hindustantimes.com

Hindustan Times caught up with Dr Dhruv Galgotia, CEO of Galgotias University as part of the Education Founder Series to gain a perspective on the status of higher education in India, the role of private universities in the current scenario and the trends that are emerging with changing educational ecologies.

The Covid-19 pandemic has been the largest disruptor for higher education across the world and India has been no exception. In fact, the tech divide has got amplified in the field of education, where one section of the population has access to the best online resources from top institutes around the world while another doesn't even have basics like electricity and internet connectivity to facilitate online classes. In a candid conversation with HT, as part of the 'Empowering people through knowledge', Dr Dhruv Galgotia, Chief Executive Officer (CEO) Galgotias University spoke about the status of higher education in India, Galgotias University and the roadmap ahead for students joining universities. Edited excerpts:

It has been 10 years since Galgotias University was

established. How has the journey been so far for you?

For any university, the true measure of progress can be adjudged by the success of its students and what they have achieved after graduating from the university. All the hard work that the university has put in in the last 10 years or so will reflect by the success of our alumni. And I am proud to say that our students are working with top companies such as Amazon, Wipro, Tech Mahindra, TCS, Cognizant, among many others and performing exceptionally well. Our students have been equally successful at starting their own ventures and having flourishing businesses pan India. I would attribute this to certain aspects - we have adopted technology for our students much ahead of time and exposed them to an upgraded university management system, expose them to the fundamentals of every subject to create a strong foundation, which helps them master any skill.

How has the virtual shift in the education sector unfolded for you so far?

Thirty per cent of the jobs that exist today will not exist in the future. So, we need to teach our students not what to think



Covid has been the largest disruptor of higher education in history, affecting billions of learners and the learning community across the world

DR DHURUV GALGOTIA, CEO, Galgotias University

but how to think. We always believe that student experience is most important and that is why we focus on experiential learning. At Galgotias, we fulfilled our commitment and we

resumed our classes within 15 days of the lockdown due to which we got the learning award by the coveted QS I-GAUGE e-learning for digital excellence. I think universities

need to be proactive and need to expose their students to various e-content in terms of whatever resources are available.

Students are sitting in the front row today. They can get access to the best faculty and the best content. As universities, we just need to channelise the right content to them through effective collaborations.

Our placements have been completely online and we have seen some of the highest placements in the lockdown period. Our industry partners have been with us for this. There is a huge inflow on the admissions side too due to online accessibility. Apart from academics, we also used technology for some social events. We conducted India's first online fest which saw participation from 30,000 students, who were all sitting in their homes.

What are your views about the current status of higher education in India?

Covid has been the largest disruptor of higher education in history, affecting billions of learners and the learning community across the world. We have seen 10 years' worth of change in the last one and a half years. And this is the age for innovation. The traditional way

of teaching will have to go and it will be replaced with experiential learning. The second wave of the pandemic has made everyone all the more anxious and apprehensive about the safety and wellbeing of children.

I believe that the situation has led to a loss of education. It has also affected the social and mental wellbeing of children. So, some universities have handled the pandemic situation very well by shifting from an offline to online model and will continue to work in a blended mode once we reopen. There is a big digital divide - there are some students who have access to the best of technologies and there are some who don't even have basic electricity or internet. This is something that needs to be addressed. Mental health also needs to be given due importance.

What will the classroom of the future look like post the pandemic?

Normalcy will return in a graded manner and even universities will have to follow guidelines set by state governments and the University Grants Commission (UGC). We need to rework and rethink on how the university will function. There will be a change in

the very structure of the classroom - we cannot have 60 students packed in a classroom anymore. The scarcest resource will be time.

Most institutions will need to compress the syllabus and make learning hours more effective. When we shifted from offline to online, the class used to go on for one hour. But we observed that students' learning hours are only 15-20 minutes, even though the class may be for one hour.

Having an effective curriculum plan with factors like quality of teaching and delivery within the time constraints, spacing gaps between classes, giving material to students beforehand so they can come prepared for lessons, will be some of the changes one can expect. We follow an outcome-based education where more focus needs to be given to the outcome of the course and evaluation techniques need to be planned in a way that the teacher and student are on the same page. Universities will need to upgrade their IT infrastructure to bridge the gap between online and offline and make it a true blended mode.

How do you perceive the role of private universities, especially since many

of them have been expanding at a drastic speed over the last few years?

All the top universities of the world which are 100-150 years old have one campus and that's how they control quality. We share a similar school of thought. We focus on one campus and give all the resources that are possible to that campus. In post-Covid times, students can get access to the best education from any faculty from anywhere in the world, through effective collaborations. As a university, we need to keep reinventing the pedagogy, evaluation tools, and bring in new industry-oriented syllabi.

What message would you like to share with students who are all set to join education courses in Indian universities, especially this year?

Today, there are so many universities and each one claims to be number one so students need to choose wisely. They should look at the return on investment - what are they getting in return for the fee which they are paying. By seeing the track record of the university, they can see placements in the past years and the average packages and then decide.